

पद १६२

(राग: मारवा - ताल: एकता)

साधक सुध सब मिल ये विचार लेहों, मायामय मन निजाग्यान
करीं बहुविधा रूप गुण, जग महाभूत अरु नाना बंध मोछ
महावाक्य साधन सकल, श्रवन मनन समाधी आतम सगुण
ध्यान ॥ध्रु. ॥ तू जनन मरन भ्रमन करत, ज्ञानरूप मार्तांड कहत,
दुःख भोगनही जागे त्यागे हो पामर मदांध करत करम मानत मैं
पडत ग्यानीं जानत नहीं निगम गूढ, मानत बाधक ॥१॥